❍ 14 / 03 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5*4=20)

➢➢ *ज्ञान धन दान करने में कंजूस तो नहीं बने ?*

➢➢ *इस पुरानी देह से बेहद के वैरागी बनकर रहे ?*

➢➢ *दिव्य बुधी द्वारा सदा दिव्यता को ग्रहण किया ?*

➢➢ *स्वयं को मेहमान समझ महान स्थिति का अनुभव किया ?*

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆

❂ *तपस्वी जीवन* ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *जिस समय जिस सम्बन्ध की आवश्यकता हो, उसी सम्बन्ध से भगवान को अपना बना लो।* दिल से कहो मेरा बाबा, और बाबा कहे मेरे बच्चे, इसी स्नेह के सागर में समा जाओ । *यह स्नेह छत्रछाया का काम करता है, इसके अन्दर माया आ नहीं सकती ।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

———————————————

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

✺ *"मैं संगमयुगी श्रेष्ठ सच्चा ब्राह्मण हूँ"*

〰✧ 2. सदा अपने को संगमयुगी श्रेष्ठ ब्रह्मण आत्मायें अनुभव करते हो? *सच्चे ब्राह्मण अर्थात् सदा सत्य बाप का परिचय देने वाले। ब्राह्मणों का काम है कथा करना, तुम कथा नहीं करते लेकिन सत्य परिचय सुनाते हो। ऐसे सत्य बाप का सत्य परिचय देने वाले, ब्राह्मण आत्मायें हैं, यही नशा रहे। ब्राह्मण देवताओंसे भी श्रेष्ठ हैं।*

〰✧ *इसलिए ब्राह्मणों का स्थान चोटी पर दिखाते हैं। चोटी वाले ब्राह्मण अर्थात् ऊँची स्थिति में रहने वाले। ऊँचा रहने से नीचे सब छोटे होंगे। कोई भी बात बड़ी नहीं लगेगी।* ऊपर बैठकर नीचे की चीज देखो तो छोटी लगेगी। कभी कोई समस्या बड़ी लगती तो उसका कारण नीचे बैठकर देखते हो। ऊपर से देखो तो मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

〰✧ *तो सदा याद रखना -चोटी वाले ब्राह्मण हैं, इसमें बड़ी समस्या भी सेकण्ड में छोटी हो जायेगी। समस्या से घबराने वाले नहीं लेकिन पार करने वाले समस्या का समाधान करने वाले।*

✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚ ••☆••✧°˚

∫∫ 3 ∫∫ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

———————————————

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *यह पहली - पहली बात है जो कि तुम सभी को बताते हो कि - मैं आत्मा हूँ, न कि शरीर*। जब आत्मा होकर बिठाते हो तभी उनको फिर शरीर भूलता है। अगर आत्मा होकर नहीं बिठाते, तो क्या फिर देह सहित देह के संबन्ध भूल जाते! जब उनको बुलाते हो, तो क्या अपने शरीर से न्यारे होकर, जो न्यारा बाप है उनकी याद में नहीं बैठ सकते हो?

〰✧ अब सब बच्चे अपने को आत्मा समझ बैठो। सामने किसको देखें? आत्माओं के बाप को। इस स्थिति में रहने से व्यक्त से न्यारे होकर अव्यक्त स्थिति में रह सकेंगे। *'मैं आत्मा बिन्दु रुप हूँ' - क्या यह याद नहीं आता है*? बिन्दि रुप होकर बैठना नहीं आता? ऐसे ही अभ्यास को बढाते जाओगे तो एक सेकण्ड तो क्या, कितनी ही घण्टे इसी अवस्था में स्थित होकर इस अवस्था का रस ले सकते हो। इसी अवस्था में स्थित रहने से फिर बोलने कि जरूरत ही नहीं रहेगी।

〰✧ बिन्दु होकर बैठना कोई जड अवस्था नहीं है। जैसे बीज में सारा पेड़ समाया हुआ है, वैसे ही मुझ आत्मा में बाप की याद समायी हुई है। ऐसे होकर बैठने से सब रसनायें आयेगी और साथ भी यह नशा होगा कि - 'हम किसके सामने बैठे हैं। बाप हमको भी अपने साथ कहाँ ले जा रहे है।' बाप तुम बच्चों को अकेला नहीं छोडता है। जो बाप का और तुम बच्चों का घर है, वहाँ पर साथ में ही लेकर जायेंगे। सब इकट्ठे चलने ही है। *आत्मा समझकर फिर शरीर में आकर कर्म भी करना है, परंत कर्म करते हुए भी न्यारा और प्यारा होकरल

रहना है*। बाप भी तुम बच्चों को देखते हैं। देखते हुए भी बाबा न्यारा और प्यारा है ना। अच्छा।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

〰✧ जो बन्धन मुक्त की स्थिति सुनाई कि शरीर में रहते हुए सिर्फ निमित ईश्वरीय कर्तव्य के लिए आधार लिया हुआ है। अधीनता नहीं निमित आधार लिया है। *जो निमित आधार शरीर को समझेंगे वह कभी भी अधीन नहीं बनेंगे। निमित आधार मूर्त ही सर्व आत्मओं के आधार मूर्त बन सकते हैं। जो स्वयं ही अधीन है वह उद्धार क्या करेंगे।* इसलिए सर्विस की सफलता इतनी है जितनी अधीनता से परे हरेक हैं।

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°° ••☆••✧°°

———————————————————

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ज्ञान के तीसरे नेत्र से बाप को देखना"*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मधुबन पहाड़ी पर बैठ स्वदर्शन चक्र फिरा रही हूँ... चक्र फिराते-फिराते अपने सभी स्वरूपों में खो जाती हूँ... कलयुगी अज्ञानता के अंधकार में सोई हुई मुझ आत्मा को परमात्मा ने ज्ञान के चक्षु देकर त्रिनेत्री बना दिया... सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देकर बुद्धिवान बना दिया...* पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बना दिया... मीठे बाबा को स्मृतियों में लाते ही तुरंत बाबा सामने हाजिर हो जाते हैं और मेरे बाजू में बैठ सिर पर प्यार से हाथ फिराते हुए कहते हैं...

❉ *ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर मेरी आत्म ज्योति को जगाते हुए प्यारे बाबा कहते हैं:-* "मेरे मीठे फूल बच्चे... शरीर नही खुबसूरत मणि हो सदा अपने अविनाशी स्वरूप के नशे में रहो... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सदा दमकते स्वरूप आत्मा पर ही नजर डालो...* शरीर के भ्रम से निकल कर सदा अपने सत्य चमकते स्वरूप को ही निहारो... अपने सच्चे वजूद और सत्य पिता को ही हर पल यादो में बसाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा दिव्य चक्षुओं से तीनों कालों का ज्ञान पाकर दिव्यता से सजते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा ज्ञान के तीसरे नेत्र से पूरे विश्व को मणियो से दमकता हुआ निहार रही हूँ... मीठे बाबा के सारे खुबसूरत सितारे धरा पर जगमगा रहे है... *प्यारे बाबा आपने ज्ञान के तीसरे नेत्र से मुझे त्रिकालदर्शी बना कर... मेरी दुनिया कितनी खुबसूरत प्यारी बना दी है..."*

❉ *मीठा बाबा सभी खजानों से भरपूर कर मुझे मालामाल करते हुए कहते हैं:-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *ज्ञान के तीसरे नेत्र से सदा मीठे बाबा को निहारते

रहो और बाबा की सारी शक्तियाँ अथाह खजानो से स्वयं को भरपूर करते रहो...* सारी ईश्वरीय खानो पर अपना नाम लिख डालो... यह ईश्वर पिता के मीठे साथ का,भाग्य बनाने का खुबसूरत समय... स्वयं को मात्र शरीर समझ हाथ से यूँ जाने न दो..."

➳ _ ➳ *मीठे बाबा के यादों में समाकर सर्व शक्तियों की अधिकारी बन मैं आत्मा कहती हूँ:-* "मेरे प्राणप्रिय बाबा... मै आत्मा आपकी मीठी यादो में खोयी हूँ... मेरा रोम रोम आँखे बन गया है.. *और हर पल हर साँस से आपको ही निहार रही हूँ... मै आत्मा अनन्त शक्तियो से भरती जा रही हूँ...* और बस एक के ही रंग में रंगी सी हूँ... मीठा बाबा ही मेरी यादो में समाया है..."

❉ *मेरे मनमीत बाबा अपनी बाँहों के झूले में झुलाते हुए सत्यता की राह दिखाते हुए कहते हैं:-* "प्यारे सिकीलधे मीठे बच्चे... *अपने खुबसूरत स्वरूप और सच्चे पिता की यादो में खो जाओ... देह की दुनिया से निकल अपने अविनाशी आत्मा और शिव पिता की मीठी यादो में स्थिर हो जाओ...* शरीर होने के भान से परे होकर चमकते ओजस्वी स्वरूप के नशे से भर जाओ... और सच्चे पिता को यादकर उसकी प्यारी सी बाँहों में स्नेह से झूल जाओ..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा ज्ञान अंजन लगाकर खुशियों के बगिया में मुस्कुराते हुए कहती हूँ:-* "हाँ मेरे मीठे बाबा... मै आत्मा शरीर के मायाजाल से मुक्त होकर आपकी प्यार भरी बातो में यादो में खो गई हूँ... आपके सच्चे प्यार को पाकर जीवन कितना मीठा खुशियो भरा हो गया है... *चारो ओर सुख और खुशियो के फूल खिल उठे है... जीवन प्रेम और शांति का पर्याय बन महक उठा है..."*

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- ईश्वरीय सेल्वेशन आर्मी बन विश्व के डूबे हुए बेड़े को पार लगाना है*"

➳ _ ➳ विश्व भ्रमण करता हुआ मैं फ़रिश्ता देख रहा हूँ सारी दुनिया के डूबे हुए बेड़े को। यहाँ - वहाँ चारों और भयानक दुख अशान्ति फैली हुई है। घर - घर में महाभारत छिड़ी हुई है। *आपसी प्यार, स्नेह जैसे समाप्त हो गया है। माया रावण के वश हो, सभी एक दूसरे को दुख दे रहें हैं। अपने ही स्वभाव, संस्कारों के कारण परेशान हो, दुखी हो रहें हैं किंतु उन्हें छोड़ नही पा रहें हैं। दुख और पीड़ा से तड़प रहें हैं और भगवान को पुकार रहें हैं, हे प्रभु आओ हमारी रक्षा करो*। बेचारे इस बात से भी सर्वथा अंजान है कि सारी दुनिया के डूबे हुए बेड़े को पार लगाने वाला भगवान, वो परम पिता परमात्मा जिसे वो पुकार रहें हैं वो परमात्मा इस धरा पर आ चुके हैं और अपनी श्रेष्ठ मत देकर सबके डूबे हुए बेड़े को पार लगा रहें हैं।

➳ _ ➳ विश्व की ऐसे हालत देख, उनकी सहायता करने का संकल्प ले कर मैं फरिश्ता अब ऊपर आकाश की ओर उड़ जाता हूँ और आकाश को पार कर, उससे और ऊपर उड़ता हुआ अपने प्यारे बापदादा के अव्यक्त वतन में पहुंच जाता हूँ। *सफेद प्रकाश से प्रकाशित इस अव्यक्त वतन में मैं देख रहा हूँ अनेक फ़रिशतो को जो मेरे ही समान विश्व के डूबे हुए बेड़े को पार लगाने के परमात्म कर्तव्य में सहयोगी बनने का संकल्प ले कर आये हैं और परमात्म शक्तियाँ स्वयं में भरकर इस कर्तव्य को पूरा करने के लिए विश्व ग्लोब की ओर जा रहें हैं*। अपने प्यारे बापदादा को मैं देख रहा हूँ जिनके नयनों में अपने सहयोगी बच्चों के लिए अपार स्नेह स्पष्ट झलक रहा है।

➳ _ ➳ अपनी नजरों से निहाल करते बापदादा, अपनी दृष्टि द्वारा अपनी शक्तियों का बल उनमे भर रहें हैं। इस खूबसूरत दृश्य को देखता हुआ मैं फ़रिश्ता बापदादा के पास पहुँचता हूँ और जा कर उनके समीप बैठ जाता हूँ। *अपनी मीठी दृष्टि से मुझे देखते हुए बापदादा मुझे अपने पास बुलाते हैं। बाबा से दृष्टि लेते हुए, उस दृष्टि में समाई परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर होता हुआ मैं सपष्ट अनुभव कर रहा हूँ*। परमात्म बल मेरे अंदर भरता जा रहा है जो मुझे शक्तिशाली बना रहा है। अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रखकर बापदादा मुझे सबके डूबे हुए बेड़े को श्रीमत पर पार लगाने का वरदान दे रहें हैं। *परमात्म शक्तियों से भरपूर होकर, अपने आत्मा भाइयो की सहायता करने के

अपने संकल्प को पूरा करने के लिए अब मैं विश्व ग्लोब की ओर चल पड़ता हूँ*।

➳ _ ➳ विश्व ग्लोब पर बैठ अपने प्यारे बापदादा का मैं आह्वान करता हूँ और उनकी छत्रछाया के नीचे स्वयं को अनुभव करता हुआ, अब मैं उनसे सर्वशक्तियाँ ले कर सारे विश्व में प्रवाहित कर रहा हूँ। *आपसी स्नेह और प्रेम के वायब्रेशन्स सारे विश्व में फैला रहा हूँ ताकि देह अभिमान के कारण सबके मन मे एक दूसरे के लिए जो नफ़रत पैदा हो चुकी है वो आपसी प्यार में बदल जाये। अपने जिन पुराने स्वभाव संस्कारों के कारण मनुष्य दुखी हो रहें हैं उनसे मुक्त हो जायें। *इन्ही शुभ भावनाओं और शुभ कामनाओं के साथ बापदादा के साथ कम्बाइन्ड होकर मैं सारे विश्व में परमात्म स्नेह की वर्षा कर रहा हूँ* और देख रहा हूँ परमात्म प्यार की वर्षा कैसे सबको परिवर्तित कर रही है। सबकी डूबी हुई नैया जैसे किनारे पर पहुँच रही है।

➳ _ ➳ परमात्म प्रेम और परमात्म शक्तियाँ चारों और फैलाता हुआ मैं फ़रिश्ता फिर से सारे विश्व का भ्रमण करता हुआ वापिस लौटता हूँ। *फिर से साकारी दुनिया में आकर मैं अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो जाती हूँ और सबके डूबे हुए बेड़े को श्रीमत पर पार लगाने की अपनी प्रतिज्ञा को स्मृति में रख, निमित बन अपने कार्य क्षेत्र पर मिली सेवा को सम्पन्न करने में लग जाती हूँ*। शरीर निर्वाह अर्थ कर्म करते हुए इस ईश्वरीय कर्तव्य को भी अब मैं साथ - साथ कर रही हूँ। अपने हर संकल्प, बोल और कर्म को श्रीमत पर चल श्रेष्ठ बनाकर, परमात्म प्यार और परमात्म पालना का अनुभव सबको करवाते हुए, मैं *सबको परमात्म परिचय देकर उन्हें दुखों से छूटने और सदा सुखी होने का सहज उपाय बताकर उनके डूबे हुए बेड़े को पार लगाने की ईश्वरीय सेवा अब निरन्तर कर रही हूँ*।

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं दिव्य बुद्धि द्वारा सदा दिव्यता को ग्रहण करने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सफलतामूर्त आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मै आत्मा सदा स्वयं को मेहमान समझकर रहती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदैव स्थिति को अव्यक्त वा महान बनाती हूँ ।*
✺ *मैं महान आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *एक दो के सहयोगी बनो जो सभी मास्टर सर्वशक्तिवान बन आगे उड़ते चलें। दाता बनकर सहयोग दो।*बातें नहीं देखो, सहयोगी बनो। स्वमान में रहो और सम्मान देकर सहयोगी बनो क्योंकि *किसी भी आत्मा को अगर आप दिल से सम्मान देते हो, यह बहुत-बहुत बड़ा पुण्य है क्योंकि कमजोर आत्मा को उमंग-उत्साह में लाया तो कितना बड़ा पुण्य है!* गिरे हुए को गिराना नहीं है, गले लगाना है अर्थात् बाहर से गले नहीं लगाना, *गले लगाना अर्थात् बाप समान बनाना। सहयोग देना।*

✺ *ड्रिल :- "गिरे हुए को गिराना नहीं, गले लगाना"*

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान... सर्वशक्तिवान शिवबाबा से कंबाइंड हूँ... प्यारे बाबा से सर्वशक्तियों की किरणें निरन्तर मुझ आत्मा पर पड़ रहीं हैं... *मैं आत्मा पदमापदम सौभाग्यशाली... जो स्वयं भगवान मेरा हो गया... वाह मेरा भाग्य...बाबा ने मेरे सारे बोझ... चिंताएं... फिकरातों से मुक्त कर दिया... अब मुझे भी बाप समान बनकर सभी आत्माओं को सहयोग देकर... उन्हें आप समान बनाना है...*

➳ _ ➳ *मैं आत्मा मास्टर दाता के स्वमान में रह हरेक आत्मा के प्रति शुभ भावना... शुभ कामना रख रही हूँ... मैं आत्मा फॉलो फादर कर सभी आत्माओं को सम्मान की दृष्टि से देख रही हूँ...* जैसे ब्रह्मा बाबा ने अपकारियो पर भी उपकार किया... निंदा करने वालो को भी अपना मित्र समझा... उन्हें गले लगाया... वैसे ही *मैं आत्मा फॉलो फादर करती... सभी आत्माओं के प्रति सदभावना रख हर कर्म कर रहीं हूँ...*

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाप समान विश्व की सर्वआत्माओं के प्रति कल्याण की भावना रख रहीं हूँ... किसी भी आत्मा के प्रति भेदभाव नहीं रखती अपितु सर्व के प्रति आत्मिक दृष्टि रखती हूँ... *मैं आत्मा विश्वकल्याणकारी के स्वमान में स्थित हो... विशाल दिल रख... रहम की भावना से... सर्व आत्माओं के प्रति सुख... शांति... के वायब्रेशन्स फैला रही हूँ...*

➳ _ ➳ मैं मास्टर सर्वशक्तिवान... अपनी श्रेष्ठ वृति के वायब्रेशन्स द्वारा वायुमण्डल को ऐसा बनाती हूँ... *जो कोई भी मेरे सम्बन्ध सम्पर्क में आता है... वह खुद बखुद मेरी ओर आकर्षित होता है...* उन्हें मुझसे स्नेह... प्यार की भासना आती है... सहयोग... हिम्मत की अनुभूति होती है...

➳ _ ➳ *मैं आत्मा अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य को देख बहुत खुश हो रहीं हूँ... सदा सर्वशक्तिवान के स्वमान में रह... उमंग उत्साह के पंख लगा... हरेक को सहयोग देती हुई... सम्मान देती हुई... उडती कला में उड रही हूँ...* और

सर्वशक्तिवान... शिवबाबा... भाग्यविधाता को दिल से शुक्रिया करती हुई... अपने भाग्य की सराहना कर रहीं हूँ...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔